Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886|
Vol. 18 Issue 11, Nov- 2023
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

सूर्यबाला कृत कहानी 'दिशाहीन' में मार्मिक अभिव्यक्ति

शोधार्थी
मन्जू रानी
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय अस्थल बोहर (रोहतक)

शोध निर्देशक
डॉ० रामरती (सेवानिवृत)
सह–प्राध्यापक (हिंदी विभाग)
महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

सारांश :

ग्रामीण और शहरी स्तर पर जीवन शैली तथा भाषा के माध्यम से शिक्षा में पाया जाने वाला अंतर। ग्रामीण स्तर की शिक्षा विदेशी भाषा के साथ साथ पाश्चात्य संस्कृति से भी प्रभावित हैं। इस कहानी का मुख्य विषय ह, ग्रामीण स्तर से जब कोई युवा/बच्चा अपनी उच्च शिक्षा गहण करने के लिए शहरी जगत में प्रवेश करता है तो वहाँ की भाषा व जीवन शैली के कारण एक ऐसे भंवर जाल में फंस जाता है जहाँ से उसके लिए निकल पाना असंभव हो जाता है। परिस्थितियाँ उसके ऊपर इतनी हावी हो जाती है कि वह समझ ही नहीं पाता कि उसका भविष्य कितना अधकारमय अर्थात् 'दिशाहीन'।

प्रस्तावना :

शिक्षा मनुष्य के जीवन का आधार है । शिक्षा के माध्यम से तर्कशील वचिंतनशील शक्ति का विकास होता है । इसी तर्कशीलता व चिंतनशीलता केकारण ही जीवन के अहम् फैसलों पर निर्णय ले पाते हैं । शिक्षा से ही हम वांछनीय तथा अवांछनीय तथ्यों में फर्क कर पाते हैं। बतौर शिक्षा का हमारे जीवन में विशेष महत्त्व है। इसको प्राप्त करने का सभी को समान अधिकार प्राप्त है। इस कहानी में शिक्षा के प्रति समान अधिकार खोखले होते दिखाई देते हैं। आज की आधुनिक शिक्षा कुछ निर्धारित मानदंडों पर आधारित है जो बच्चे की प्रगति में बाधा बन रहे हैं । यदि शिक्षा कुछ ऐसे मानदंडों (भाषा, जीवनशैली) पर आधारित होगी तो शिक्षा

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886|
Vol. 18 Issue 11, Nov- 2023
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

कुछ लोगों के अधिकार में होगी । एक साधारण परिवार या क्षेत्र से संबंध रखने वाले बच्चे शिक्षा से वंचित रह जायेंगे क्योंकि शिक्षण संस्थानों द्वारा निर्धारित मानदंडों को वहन नहीं कर पायेंगे। बच्चों के भविष्य को लेकर काफी चिंताजनक विषय है । हम सब को मिलकर इस विषय पर विचार करने की आवश्यकता है ताकि बच्चों के भविष्य को अंधकारमय होने से बचाया जा सके ।

अध्ययन का उद्देश्यः

सूर्यबाला की कहानी 'दिशाहीन' के माध्यम से बच्चों का उज्ज्वल भविष्य बनाने वाली शिक्षा में विघ्न उत्पन्न करने वाले तथ्यों को जानने की कोशिश की गई है। बच्चों के लिए बाधा बनी असमंजस स्थिति में कैसे सुधार किया जा सकता है। सभी तथ्यों का बारीकी से अध्ययन कर एक ऐसी शिक्षा प्रणाली अपनाने की आवश्यकता है कि कुछ निर्धारित मानदंडों के कारण कोई भी बच्चा शिक्षा से वंचित न रहे।

शोध प्रविधि :

प्रस्तुत शोध कार्य में वर्तमान शिक्षा पद्धति में सम्माहित तथ्यों का विश्लेषण किया गया है। इसमें अध्ययन सामग्री के साथ – साथ लिखितसामग्री से तथ्यों को ग्रहण करके आधार सामग्री के रूप में प्रयोग किया गया है। विषय से संबंधित तथ्य व आंकड़ों का संकलन द्वितीयक स्त्रोत सामग्री केरूप में किया गया है। अलग–अलग स्त्रोतों के माध्यम से सूचनाओं का संग्रहण करके शोध विषय का विवरण प्रस्तुत किया गया है ।

साहित्यवलाकन :

सूर्यबाला जी सत्तर के दशक की प्रसिद्ध लेखिका है। उपन्यास, कहानी एवं व्यंग साहित्य को अपने लेखन का विषय बनाया है। इनका लेखन कार्य समाज का प्रतिबिम्ब है। इसी प्रतिबिम्बता के आधार पर काफी शोध कार्य होचुका है। इसके अतिरिक्त 1984 से लेकर अब तक इनके लेखन साहित्य की काफी पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं जो समाज के लिए

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886|
Vol. 18 Issue 11, Nov- 2023
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

मार्गदर्शन प्रस्तुत करती है। यह शोध पत्र भी दिशाहीन कहानी का सार प्रस्तुत करता हैजिसमें शिक्षा बाह्य आडंबरों से ग्रसित होने से विद्यार्थी की विडंबना का मार्मिक चित्र प्रस्तुत करता है।

विषय विस्तार :

शिक्षा हमारे जीवन में विशेष आधार का कार्य करती है। इस आधार की शुरूआत माँ के गर्भ से ही हो जाती है और यह बच्चे के मानसिक विकास का प्रथम चरण होता है । माँ के द्वारा ग्रहण शिक्षा से बच्चा खुद–ब–खुद सीखता है। इस प्रकार शिक्षा सीखने का आधार है। यह सीखने का माध्यम औपचारिक एवं अनौपचारिक दोनों तरह के होते हैं । औपचारिक शिक्षा अनौपचारिक शिक्षा से भिन्न होती है। औपचारिक शिक्षा निर्धारित नियमों, कानूनों पर आधारित होती हैं अर्थात् औपचारिक शिक्षा आदर्शो मान्यताओं से निर्मित होती है। "औपचारिक शिक्षा इसम किसी निश्चित स्थान पर कुछ निश्चित व्यक्तियों द्वारा कुछ निश्चित माध्यमों से निश्चित पाठ्यक्रम की शिक्षा दी जाती है।"[1] अनौपचारिक शिक्षा अपने आस–पास के वातावरण को देखकर, सुनकर, समझकर अपनी ज्ञानेंद्रियों द्वारा ग्रहण कर सीखता है। इस माध्यम से हम जीवन पर्यंत कुछ न कुछ सीखते रहते हैं। औपचारिक शिक्षा की शुरूआत प्राथमिक स्तर से शुरू हो जाती है। इस शिक्षा को ग्रहण करने के मायने प्रत्येक स्तर पर अलग–अलग है जैसे प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च शिक्षा। प्राथमिक शिक्षा व माध्यमिक शिक्षा तो बच्चे अपने अनुकूल ग्रहण कर लेता है। उसके सामने चुनौती बन जाती है उच्च शिक्षा ग्रहण करना। इस चुनौती का शिकार बनता है 'हरिओम'। हरिओम एक होनहार व आदर्शवादी बच्चा है। अपनी ग्रामीणस्कूली शिक्षा के दौरान अपने अच्छे प्रदर्शन से कक्षा में हमेशा अव्वल स्थान प्राप्त करता था। शिक्षक भी काफी सराहना करते थे। परिवार वालों को भी हरिओम से काफी उम्मीदें थी तथा आर्थिक तंगी के बावजूद कभी पढ़ाई में विघ्न नहीं आने दिया।

हरिओम के बेहतरीन प्रदर्शन के कारण उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए शहर के सबसे अच्छे कॉलेज में प्रवेश पाने की कोशिश की जाती है । हरिओम व परिवार वाले कॉलेज में प्रवेश पाने की प्रक्रिया से अंजान व परेशान हैं । "कॉलेज के नाम की वजह से एडमिशन की

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886|
Vol. 18 Issue 11, Nov- 2023
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

भीड़ इतनी होती है कि मेरिट से लेने पर प्रथम श्रेणी से ही सीटें भर जाती हैं लेकिन दूसरा धक्का इससे कहीं बढ़कर था जब हम तरह–तरह की फीसों की लंबी चौडो लिस्ट देखी। खेल–कूद, ड्रामा, डिबेट और जाने कितनी कल्चरल सोसाईटीज हॉबोज आदि देखकर हम घर लौट आए।"[2] कॉलेज में प्रवेश पाना ही एक विकट समस्या थी । क्योंकि शिक्षण संस्थानों द्वारा निधारित कठोर नियमों के प्रति कोई एहतियात नहीं की जाएगी। ये हमारे समाज में शिक्षण संस्थानों के पेचीदा कानून है जिसका भुगतान सामान्य परिवार से संबंध रखने वाला बच्चा करता है। "ऐसे कठोर नियमों का उद्देश्य इसके सिवाए और क्या हो सकता था कि गरीब के लड़के स्कूल छोड़कर भाग जाएं। वहीं हृदयहीन दफ्तरी शासन, जो अन्य विभागों में है, हमारे शिक्षालयों में भी है, वह किसी के साथ रियायत नहीं करता । चाहे जहाँ सेलाओ, कर्ज लो, गहने गिरवी रखो, लोटा थाली बेचो, चोरी करो, मगर फीस जरूर दो, नहीं दूगनी फीस देनी पड़ेगो या नाम कट जाएगा।"[3]

शिक्षण संस्थान की बाकायदा मांग के अनुसार जैसे–तैसे प्रवेश पा लिया जाता है। मुख्य समस्या की शुरूआत कॉलेज की जीवन शैली (रहन–सहन, आचरण, व्यवहार, भाषा आदि) को लेकर होती है। जिसे देखकर हरिओम परेशान हो जाता है । शिक्षा प्राप्त करना ही मुख्य लक्ष्य था इसके अतिरिक्त अन्य किसी पहलू में कोई दिलचस्पी नहीं थी। अपने इसी लक्ष्य को आधार बनाकर हरिओम यहाँ तक पहुँच पाया है । शहरी शिक्षा और ग्रामीण शिक्षा के बीच मुख्य खाई पैदा करती थी अंग्रेजी भाषा, जो ग्रामीण छात्र से कोसों दूर होती है । उस युवा के लिए नई जगह, नया माहौल एक डरावना एहसास था। कॉलेज में चपरासी से लेकर सभी अंग्रेजी में बाते करते थे। उसके हिंदी बोलने से सभी की नजरें उसी पर आ जाती हैं । पहले ही दिन ऑफिस की औपचारिकताएं पूरी करने में काफी हताश हो जाता है । लेक्चरर क्लास मे बच्चों से परिचय प्राप्त कर रहे थे । सभी जोश के साथ अपना परिचय दे रहे थे। मेरे अंग्रेजी के अजीबोगरीब परिचय से सभी खुलेआम हँस रहे थे। मैं शर्म से पानी–पानी हो रहा था। यह सिलसिला अभी खत्म नहीं हुआ था हर दिन लेक्चर में वही बेबसी व बैचेनी । मेरे मन में उलझन बनी ही रहती क्योंकि भाषा मेरी समझ से परे थी । ष्समझ और भाषा का

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886|
Vol. 18 Issue 11, Nov- 2023
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

रिश्ता कुछ ऐसा होता है जैसे हवा और उसकी तरंगोंका। हमारी समझ अपनी भाषा में ही बनती है। भाषा के बिना समझ की परिकल्पना असंभव है।"[4]

इन सब के चलते हरिओम काफी दुविधाग्रस्त स्थिति में था । उसे अपने चारों ओर कोई उम्मीद नजर नहीं आ रही थी। अपना सीधा–साधा माहौल व हिंदी भाषी होना उसके आत्मविश्वास पर भारी पड़ रहा था। इसी कारण वह अपनी पढ़ाई में बिछुड़ रहा था। अपने सुसुप्त आत्मविश्वास को जागृत करने के लिए, अपने आदर्शो को लांघकर वहाँ के तौर तरीकों को अपनाने की कोशिश करता है। इसके प्रभाव से मानसिक असंतुलन तथा आर्थिक विपन्नता जैसे समस्या उत्पन्न हो जाती है। हरिओम के इस व्यवहार से परिवार वालों पर भी प्रभाव पड़ता है। अपने आगे बढ़ने की कोशिशें को सहन नही कर पान के कारण हालात काफी सुस्त व नाजुक बनी रहती । लेक्चर अंग्रेजी माध्यम से होने के कारण समझ नहीं पा रहा था। अपनी नई कोशिशें पर सवार हाने के कारण पढ़ाई को गंभीरता से वहन नहीं कर पा रहा था जिससे सेसेस्टर के अंत में केवल पैंतालीस प्रतिशत अंकों से मात्र पास होता है। पिता जी का समाचार पत्र मिला जिसमें घर की स्थिति के बारे में बताते हैं। बार–बार पैसे मंगवाने पर अफसोस जताते हुए कहते हैं कि तुम्हें अपने परिवार की आर्थिक स्थिति का पता है जो पैसा बचता है वो आपकी शिक्षा पर खर्च हो जाता है। अंत में हरिओम अपनी दोहरी विडंबना पूर्ण स्थिति में इस कदर उलझ जाता है कि उसके सोचने समझने की शक्ति क्षीण हो जाती है। "मैं चुपचाप अपना थैला लिए अतीत, वर्तमान सबकोझुठलाता अंधेरी सड़क पर अनाम दिशा की ओर निकल पड़ा हूँ। शायद इस अंधकार की तरह ही मेरा भविष्य भी है।

उत्तरदायी कौन है, नहीं बता सकता,

पता नहीं कहाँ जाऊंगा, मैं दिशाहीन।"[5]

इस प्रकार दिशाहीन कहानी के माध्यम से लेखिका आधुनिक शिक्षाव्यवस्था पर सवाल उठाती है कि कैसे कुछ मापदंड शिक्षा पर हावी होकर युवा का भविष्य अंधकारमय बना देते हैं

संदर्भ ग्रंथ :

1. प्रमुख भारतीय शिक्षा दार्शनिक : रामनाथ शर्मा, प्रकाशक एटलांटिक पब्लिशर्स, संस्करण 2004
2. दिशाहीन (कहानी), सूर्यबाला, प्रकाशक : प्रतिभा प्रतिष्ठान, संस्करण, 2020
3. कर्मभूमि (उपन्यास), प्रेमचंद, डायमंड पॉकेट बुक्स, संस्करण 2005
4. समझ का माध्यम (राष्ट्रीय परिसवाद 2008–2010), संध्या सिंह/कीर्ति कपूर, प्रभाग प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2010.
5. दिशाहीन (कहानी) : सूर्यबाला, प्रतिभा प्रतिष्ठान, संस्करण 2020.